अध्याय 5

मिस्र में असफलता

इस्राएल के लोगों को छुड़ाने के लिए मूसा के प्रथम प्रयास का रिकॉर्ड अध्याय 5 और 6 में देखने को मिलता है। सम्भावित रुप से यह आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है कि उसके प्रयास का अन्त असफलता रही। जंगल में प्रभु के लिए पर्व करने के लिए मूसा और हारून फ़िरौन के सामने उपस्थित हुए जिससे कि लोगों के लिए स्वीकृति प्राप्त कर सकें (5:1)। फ़िरौन ने परमेश्वर से आए हुए सन्देश को अस्वीकार कर खारिज कर दिया और इतना ही नहीं परन्तु इस्राएल के लोगों के काम के बोझ को बढ़ा देने की भी आज्ञा दे दी (5:2-9)। परिणाम के रुप में लोगों ने भारी काम का बोझ और बड़ी पीड़ाएँ देखी (5:10-14)। जब इस्राएल के लोगों ने फ़िरौन से शिकायत की, तो उसने उनके बोझ को कम करने से मना कर दिया (5:15-19)। परिणामस्वरूप उन्होंने इसके लिए मूसा और हारून से शिकायत की (5:20, 21), और मूसा ने इसके बदले में प्रभु से शिकायत की (5:22, 23)।

मूसा का निवेदन और फ़िरौन का नकारात्मक प्रत्युत्तर (5:1-4)

[1]इसके पश्चात् मूसा और हारून ने जाकर फ़िरौन से कहा, "इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यों कहता है: 'मेरी प्रजा के लोगों को जाने दे कि वे जंगल में मेरे लिये पर्व करें'।" [2]फ़िरौन ने कहा, "यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूँगा।" [3]उन्होंने कहा, "इब्रियों के परमेश्वर ने हम से भेंट की है; इसलिये हमें जंगल में तीन दिन के मार्ग पर जाने दे, कि अपने परमेश्वर यहोवा के लिये बलिदान करें, ऐसा न हो कि वह हम में मरी फैलाए या तलवार चलवाए।" [4]मिस्र के राजा ने उनसे कहा, "हे मूसा, हे हारून, तुम क्यों लोगों से काम छुड़वाना चाहते हो? तुम जाकर अपना-अपना बोझ उठाओ।"

आयत 1. लोगों से मिलने के बाद मूसा और हारून, फ़िरौन के पास गए। वे इस प्रकार फ़िरौन से कैसे मिल पाए? क्या मूसा के पूर्व पद के कारण फ़िरौन तक पहुँचने के लिए उसे अधिकार प्राप्त हुआ अथवा मिस्र से निकलने के बाद चालीस वर्ष तक अदालत से उसे भुला दिया गया था? क्या यह पर्याप्त था कि उसने और हारून ने, मिस्र के लोगों के सम्मुख गुलाम लोगों के एक बड़े समूह और महत्व का प्रतिनिधित्व किया?

मूसा और हारून ने भविष्यद्वक्ता की भूमिका के साथ फ़िरौन को सम्बोधित किया: **"परमेश्वर यहोवा यों कहता है।"** तब उन्होंने **लोगों** के लिए स्वीकृति चाही जिससे कि वे परमेश्वर यहोवा के आदर में **जंगल में** जाकर **पर्व कर सकें**। मिस्र के लोगों ने इसी प्रकार के निवेदन अन्य लोगों से भी सुने होंगे जो कि उनके लिए काम करते थे। "पर्व कर सकें" वाक्यांश חָגַג *(छगग)* क्रिया से अनुवाद किया गया है और तीर्थयात्री उत्सव को बताता है। यह शब्द निर्गमन में बाद में इस्राएल के लोगों के वार्षिक पर्वों: फ़सह, अखमीरी रोटी का पर्व, कटनी का पर्व, और बटोरन का पर्व (12:14; 23:14-16) के सन्दर्भ में देखने को मिलता है ।

आयत 2. फ़िरौन ने संक्षिप्त रुप से उनके निवेदन को यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया, **"यहोवा कौन है कि मैं उसका वचन मानकर इस्राएलियों को जाने दूँ? मैं यहोवा को नहीं जानता, और मैं इस्राएलियों को नहीं जाने दूँगा।"** फ़िरौन ने आरम्भ से ही अपने हृदय की कठोरता प्रकट की। ऊपरी तौर पर यहोवा परमेश्वर के साथ उसका कोई अनुभव नहीं था और न ही दबाए हुए लोगों के एक समूह के ईश्वर के लिए वह कोई आदर रखता था। फ़िरौन को, जो कि स्वयं को एक ईश्वर मानता था, यहोवा परमेश्वर की माँग निरर्थक लगी।

इस आयत को निर्गमन के कथन को समझने की एक कुँजी के रुप में देखा जा सकता है: मिस्री लोगों के साथ परमेश्वर के व्यवहार का उद्देश्य यह था कि फ़िरौन को सिखाया जा सके कि यहोवा परमेश्वर कौन है और उस पर यह प्रभाव डाला जा सके कि सम्पूर्ण मानवजाति - यहाँ तक कि मिस्र के राजा को भी - यह चाहिए कि उसकी आज्ञा का पालन किया जाए। आगे की घटनाओं से फ़िरौन अच्छी प्रकार से जान गया कि यहोवा परमेश्वर कौन है!

आयत 3. मूसा और हारून ने इस बात पर बल देते हुए फ़िर से फ़िरौन से निवेदन किया कि इस तीर्थ यात्रा के लिए **परमेश्वर** ने आज्ञा दी है (देखें 3:18)। इस पर्व के लिए **तीन दिन की यात्रा** के साथ-साथ **बलिदान** की आवश्यकता थी। इस यात्रा की दूरी का कारण यह था कि मिस्री लोग, इस्राएल के लोगों के बलिदानों को घृणित मानते थे (8:26 पर टिप्पणी देखें)। मूसा और हारून ने फ़िरौन को चेतावनी दी कि अगर वह परमेश्वर के लोगों को जाने की स्वीकृति नहीं देता है तो उसे भयंकर परिणामों का सामना करना होगा।

आयत 4. जब मूसा और हारून स्वीकृति पाने के लिए निरन्तर हठ करते रहे तब फ़िरौन ने उन पर दोष लगाया कि वे **लोगों से काम छुड़वाना चाहते हैं**। तब ईर्ष्या और चुनौती को प्रकट करते हुए उसने लोगों के काम को और अधिक कठिन कर दिया (5:5-14)। अपने प्रभाव में उसने प्रत्युत्तर दिया, "मुझसे इस प्रकार का निवेदन करने का साहस तुमने कैसे किया? मैं तुम्हें बताऊँगा कि तुम अपने काम से छूटने के बारे में सोच भी नहीं सकते!" यह राजा, पिछले राजा की तुलना में इस्राएल के लिए किसी प्रकार का तरस नहीं रखता था।

निवेदन के परिणाम: पुआल इकट्ठे करना (5:5-14)

फ़िरौन के कठोर आदेश (5:5-9)

5और फ़िरौन ने कहा, "सुनो, इस देश में वे लोग बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको परिश्रम से विश्राम दिलाना चाहते हो!" 6फ़िरौन ने उसी दिन उन परिश्रम करवानेवालों को जो उन लोगों के ऊपर थे, और उनके सरदारों को यह आज्ञा दी, 7"तुम जो अब तक ईंटें बनाने के लिये लोगों को पुआल दिया करते थे, वह आगे को न देना; वे आप ही जाकर अपने लिये पुआल इकट्ठा करें। 8तौभी जितनी ईंटें अब तक उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उनसे बनवाना, ईंटों की गिनती कुछ भी न घटाना; क्योंकि वे आलसी हैं, इस कारण यह कहकर चिल्लाते हैं, 'हम जाकर अपने परमेश्वर के लिये बलिदान करें।' 9उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा करवाई जाए कि वे उस में परिश्रम करते रहें और झूठी बातों पर ध्यान न लगाएँ।"

आयत 5. एक बार फ़िर राजा ने उत्तर दिया, **"सुनो, इस देश में वे लोग** [इस्राएल के लोग] **बहुत हो गए हैं, फिर तुम उनको परिश्रम से विश्राम दिलाना चाहते हो!"** इस कथन का पहला भाग NRSV में इस प्रकार अनुवादित है, "सुनो, वे लोग [इस्राएल के लोग] संख्या में, इस देश के लोगों [मिस्र के लोग] से बहुत अधिक हो गए हैं।"[1] अगर इस वाक्यांश का अर्थ "मिस्र के लोग" है जो कि एक उचित अनुमान है तब सम्भव है कि यह NRSV अनुवाद हो जो कि सामरी पंचग्रन्थ के अनुसार चलता है। फ़िर भी, "इस देश में वे लोग" का अर्थ "किसान" भी हो सकता है और अधिक उपयुक्त रुप से हो सकता है कि यह इस्राएल के लोगों के लोगों का संकेत दे रहा हो, जैसा कि इब्रानी पाठ्य के द्वारा सुझाया गया है, जो कि NASB और अधिकतर अन्य मुख्य संस्करणों के द्वारा आगे बढ़ता है।[2]

आयत 6. मूसा और हारून के निवेदन के प्रत्युत्तर में, राजा ने **उन परिश्रम करवानेवालों को जो उन लोगों के ऊपर थे, और उनके सरदारों को** एकत्रित किया। "लोगों के ऊपर, जो कि उनसे परिश्रम करवाते थे," मिस्त्री लोग थे जो कि ईंटें बनाने के काम पर मुखिया नियुक्त किए गए थे और "उनके सरदार," इस्राएल के लोग थे जिन्हें मिस्र के लोगों ने कार्य समूह के ऊपर नियुक्त किया था। यहाँ पर שֹׁטְרִים *(शोटेर)* से "सरदार" के लिए इब्रानी शब्द का अक्षरशः अर्थ "शास्त्री" होता है। उनके काम में सम्भावित रुप से प्रतिदिन बनाई जाने वाली ईंटों की संख्या का लेखा-जोखा रखने का काम शामिल था।[3]

आयत 7. फ़िरौन ने इन लोगों से कहा कि आगे से **आप ही जाकर अपने लिये पुआल इकट्ठा करें**। यह, वास्तव में, समय की ख़पत और अधिक परिश्रम की प्रक्रिया थी।

रेखमायर, जो कि एक शाही सलाहकार थे (लगभग 1470-1445 ई.पू.), उनकी कब्र पर एक मिस्त्री चित्रकारी, ईंट बनाने की प्रक्रिया का वर्णन करती है।[4] किसी छोटे तालाब से पानी लाया जाता था तब फ़ावड़े से मिट्टी को मिश्रित किया

जाता था। वहाँ से मिट्टी को वहाँ लेकर जाया जाता था जहाँ ईंट बनाने वाले काम कर रहे होते थे। एक लकड़ी के साँचे को मिट्टी के ऊपर से ज़मीन पर दबाया जाता था। साँचे को हटाने के बाद, एक नए आकार की ईंट को सूरज की रौशनी में सूखने के लिए छोड़ दिया जाता था। ईंटों की ये पंक्तियाँ तैयार की जाती थी और बाद में काम में लेने की तैयारी में उन्हें जमाकर ढेर बना दिए जाते थे। एल्फ़्रेड जे. होअर्थ ने विवरण दिया कि ईंटों में पुआल क्यों मिलाया जाता था: "जब सख्त चिकनी मिट्टी में गीली मिट्टी कमज़ोर पड़ जाती है तब पुआल उसे जोड़े रखने का काम करता है। इसके विपरीत, पुआल इसलिए मिलाया जाता था कि जब सख्त चिकनी मिट्टी में गीली मिट्टी की मात्रा भरपूर हो जाती थी तो सूखने के बाद ईंट को मुड़ने और फटने से बचाया जा सके।"[5]

मिस्र में ऐसे खंडहर पाए गए हैं जिनमें इमारतें बनाई गई, इसके अतिरिक्त कम-से-कम कुछ भाग में ऐसी ईंटों से बनी हुई इमारतें थीं जिनमें पुआल मिला हुआ नहीं था। पुआलरहित ईंटें, निर्गमन के वर्णन की सच्चाई के साक्ष्य के रुप में प्रमाण हैं।[6] फ़िर भी, यह नोट किया जाए कि निर्गमन न तो यह कहता है और न ही यह परिणाम निकालता है कि इस्राएल के लोगों ने बिना पुआल के कभी ईंटें बनाई।

आयत 8. आगे, फ़िरौन न आज्ञा दी कि **जितनी ईंटें** अब तक उन्हें बनानी पड़ती थीं उतनी ही आगे को भी उन्हें बनानी होगी। पुआल की खोज के लिए जो समय खर्च होता था उतना समय ईंटें बनाने में खर्च नहीं किया जा सकता था, फिर भी इस्राएल के श्रमिकों को उतनी ही संख्या में ईंटें बनानी थी। राजा ने इस्राएल के लोगों के निवेदन को **आलसी** होने का कारण बताया। उसने यह कहते हुए मूसा और हारून की हँसी उड़ाई, **"इस कारण वे यह कहकर चिल्लाते हैं, 'हम जाकर अपने परमेश्वर के लिये बलिदान करें'"** (देखें 5:3)।

आयत 9. फ़िरौन ने इस प्रकार निष्कर्ष निकाला, **"उन मनुष्यों से और भी कठिन सेवा करवाई जाए कि वे उस में परिश्रम करते रहें और झूठी बातों पर ध्यान न लगाएँ।"** उसने इस प्रकार बुद्धि लगाई कि अगर इस्राएल के लोग व्यस्त रहेंगे तो अपने परमेश्वर यहोवा के लिए पर्व का विचार करने के लिए भी उनके पास समय नहीं होगा। आगे, मूसा और हारून के द्वारा दिए गए किसी भी प्रकार के भाषण को लोग तुच्छ जानेंगे। फ़िरौन ने उस सन्देश को "झूठे शब्द" अथवा "झूठ" (NIV) बताया जिसे इन दो लोगों ने पूर्व में परमेश्वर से प्राप्त किया।

आज्ञापालन के प्रति इस्राएली लोगों की अयोग्यता (5:10-14)

[10]तब लोगों के परिश्रम करानेवालों ने और सरदारों ने बाहर जाकर उनसे कहा, "फ़िरौन इस प्रकार कहता है, 'मैं तुम्हें पुआल नहीं दूँगा। [11]तुम ही जाकर जहाँ कहीं पुआल मिले वहाँ से उसको बटोर कर ले आओ; परन्तु तुम्हारा काम कुछ भी नहीं घटाया जाएगा'।" [12]इसलिये वे लोग सारे मिस्र देश में तितर-बितर हुए कि पुआल के बदले खूँटी बटोरें। [13]परिश्रम करानेवाले यह कह-कहकर उनसे जल्दी

करते रहे, कि जिस प्रकार तुम पुआल पाकर किया करते थे उसी प्रकार अपना प्रतिदिन का काम अब भी पूरा करो। 14और इस्राएलियों में से जिन सरदारों को फ़िरौन के परिश्रम करानेवालों ने उनका अधिकारी ठहराया था, उन्होंने मार खाई और उनसे पूछा गया, "क्या कारण है कि तुम ने अपनी ठहराई हुई ईंटों की गिनती के अनुसार पहले के समान कल और आज पूरी नहीं कराई?"

आयतें 10, 11. परिश्रम करवाने और सरदारों ने यह सूचना इस्राएल के लोगों को दी: ईंट बनाने के लिए उन्हें उतना ही **परिश्रम** करना होगा और इसी के साथ उन्हें **पुआल** भी एकत्रित करना होगा। यह सम्भावित रुप से कोई दुर्घटना नहीं थी कि उन्होंने फ़िरौन का सन्देश, यह कहते हुए, **"फ़िरौन इस प्रकार कहता है"** (देखें 5:1), उसी प्रकार इस्राएल के लोगों तक पहुँचाया जिस प्रकार मूसा और हारून ने परमेश्वर का सन्देश पहुँचाया। ऐसा कहने के पीछे यह अर्थ था कि यहोवा के शब्दों के समान ही - यहाँ तक कि उससे भी बलवान - फ़िरौन के शब्द हैं।

आयत 12. इसका परिणाम यह रहा कि **वे लोग सारे मिस्र देश में तितर-बितर हुए कि पुआल के बदले खूँटी बटोरें**। "सारे मिस्र देश में तितर-बितर हुए" सम्भावित रुप से, ईंट बनाने के लिए आवश्यक खूँटी बटोरने के लिए समय की खपत के एक विस्तृत विचार को बताने के लिए एक अतिशयोक्ति है। (अतिशयोक्ति के इसी प्रकार के प्रयोग के लिए देखें 1:9.)

आयतें 13, 14. अपेक्षा के अनुसार इस्राएल के लोग, ईंटें बनाने के लिए दी गई संख्या को पूरा करने में असमर्थ रहे जिसके परिणामस्वरूप इस्राएली सरदारों ने **मार खाई**।

इस्राएल के सरदारों की फ़िरौन से शिकायत (5:15-19)

15तब इस्राएलियों के सरदारों ने जाकर फ़िरौन की दोहाई यह कहकर दी, "तू अपने दासों से ऐसा बर्ताव क्यों करता है? 16तेरे दासों को पुआल तो दिया ही नहीं जाता और वे हम से कहते रहते हैं, 'ईंटें बनाओ, ईंटें बनाओ,' और तेरे दासों ने भी मार खाई है; परन्तु दोष तेरे ही लोगों का है।" 17फ़िरौन ने कहा, "तुम आलसी हो, आलसी; इसी कारण कहते हो कि हमें यहोवा के लिये बलिदान करने को जाने दे। 18अब जाकर अपना काम करो; और पुआल तुम को नहीं दिया जाएगा, परन्तु ईंटों की गिनती पूरी करनी पड़ेगी।" 19जब इस्राएलियों के सरदारों ने यह बात सुनी कि उनकी ईंटों की गिनती न घटेगी, और प्रतिदिन उतना ही काम पूरा करना पड़ेगा, तब वे जान गए कि उनके संकट के दिन आ गए हैं।

आयत 15. इस्राएली **सरदारों** ने तब फ़िरौन से शिकायत की। यह रुचिपूर्ण बात है कि इस्राएली सरदार, **फ़िरौन** तक पहुँच रखते थे। यह पद सूचित करता है कि मिस्र का यह राजा राज्य करने की एक व्यक्तिगत शैली रखता था कि राज्य के प्रतिदिन के मामलों में अथवा कम-से-कम स्वयं की निर्माण परियोजनाओं में वह बहुत ही निकटता से जुड़ा रहता था।

आयत 16. परिश्रम करवाने वाले लोगों ने नम्रता के साथ कहा, जिसमें उन्होंने यह बताना चाहा कि बीते समय में उन्होंने बुरे बर्ताव के अधिकारी होने जैसा कोई कार्य नहीं किया और यह दावा किया कि मिस्त्री लोगों के **दोष** के कारण ही उन्हें मार पड़ रही है। उन्होंने कहा कि अपना कच्चा माल एकत्रित करने के लिए उनके साथ अनुचित व्यवहार किया जा रहा है और उनसे कहा जा रहा है कि समान रुप से **ईंटें** बनाएँ। सरदार लोग, फ़िरौन, जिसने आदेश दिए थे (और उसके परिश्रम करवाने वाले) और इस्राएल के लोगों के बीच में, जो कि इस प्रकार की अनुचित माँगों को पूरा करने में असमर्थ थे, फँस गए थे।

आयतें 17, 18. फ़िरौन के उत्तर ने यह आदेश दोहराया कि वे लोग **आलसी** हैं इसी कारण कहते हैं कि **यहोवा के लिये बलिदान** करने को जाने दे (देखें 5:8)। उसने तब आगे कहा कि वह अपना मन नहीं बदलेगा; उन्हें अब भी स्वयं का **पुआल** इकट्ठा करना होगा और समान संख्या में **ईंटें** बनानी होंगी। फ़िरौन ने उनके शब्दों को उन्हीं के विरोध में कहा: उन्होंने कहा था, **"हमें जाने दे,"** जबकि उसने प्रत्युत्तर दिया, **"अब जाकर अपना काम करो।"** उसके कहने का अर्थ यह था कि उन्हें स्वयं के लिए पुआल इकट्ठा करना होगा क्योंकि उसने उनसे बार-बार कहा कि उन्हें "पुआल नहीं दिया जाएगा।"

आयत 19. उस बिन्दु पर **इस्राएलियों के सरदारों** ने जाना - कि जिस प्रकार फ़िरौन एक योद्धा का आचरण रखता है इस कारण - [वास्तव में] **उनके संकट के दिन आ गए हैं**। "संकट" (רַע, *ra'*) शब्द का अनुवाद "बुरा" (देखें KJV; ASV) शब्द के रुप में भी किया जा सकता है। इस इब्रानी शब्द के विषय में अंबरटो कस्सुटो ने लिखा,

> सम्भावित रुप से [इसमें] यह शामिल है ... मिस्र के समस्त देवों के मन्दिर के मुख्य देवता रि के नाम के प्रति एक संकेत दिया गया, मानो दो समकालीन विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया हो: वे स्वयं को एक बुरी [רַע, *ra'*] दशा में देख रहे थे क्योंकि उन्हें रि देवता के आराधकों के हाथों में सौंप दिया गया था।[7]

इस घटना के वर्णन की शैली ध्यान देने योग्य है। यहाँ पर, जैसा कि अन्य वर्णनों में देखने को मिलता है, एक कहानी बार-बार दोहराई गई है। इस विषय में चार बार घटना का वर्णन, लगभग समान शब्दों में, किया गया है। 7 और 8 आयत में, फ़िरौन ने परिश्रम करवाने वाले लोगों से कहा कि लोगों को पुआल नहीं दिया जाए। 10 और 11 आयत में, परिश्रम करवाने वाले लोगों ने इस सन्देश को समान शब्दों में ही इस्राएल के लोगों तक पहुँचा दिया। आयत 16, ईंटें बनाने के लिए स्वयं का पुआल इकट्ठा करने के बारे में फ़िरौन से इस्राएल के लोगों के द्वारा की गई शिकायत का रिकॉर्ड है। फ़िरौन का प्रत्युत्तर, तथा उसके द्वारा दी गई आज्ञा का दोहराव, 18 और 19 आयतों में दिया गया है।

इस्राएल के सरदारों की मूसा से शिकायत (5:20, 21)

[20]जब वे फ़िरौन के सम्मुख से बाहर निकल आए तब मूसा और हारून, जो उनसे भेंट करने के लिये खड़े थे, उन्हें मिले; [21]और उन्होंने मूसा और हारून से कहा, "यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे, क्योंकि तुम ने हम को फ़िरौन और उसके कर्मचारियों की दृष्टि में घृणित ठहराकर हमें घात करने के लिये उनके हाथ में तलवार दे दी है।"

आयत 20. इस्राएली सरदार जैसे ही राजा के कक्ष से बाहर निकले, वे **मूसा और हारून** से **मिले**, जो कि सम्भावित रुप से इस बात की **प्रतीक्षा** में थे कि जान सकें कि राजा के साथ उनका साक्षात्कार किस प्रकार का रहा। इस्राएली सरदारों ने अभी जो सुना था उससे वे बहुत ही दुखी थे। जब उन्होंने मूसा और हारून का सामना किया, उन्होंने नि:सन्देह उन दिनों को याद किया जब इन दोनों ने उन लोगों को "छुड़ाने" के लिए कहा था। वर्तमान में अनुभव किए जाने वाली पीड़ाओं की तुलना में उन्हें बीते दिन एक सुखद सपने के समान लगे।

आयत 21. इस्राएली सरदारों ने मूसा और हारून से शिकायत की; यहाँ तक कि उन्होंने उन पीड़ाओं के लिए भी उन पर दोष लगाया जिन्हें वे सह रहे थे। वे कह रहे थे, "तुम लोगों ने हमें मिस्री लोगों के लिए बदबूदार बना दिया है - तुमने उन्हें ऐसा बना दिया है कि वे हमसे घृणा करें - और उन्हें एक बहाना दे दिया है जिससे कि वे हमें मार डालें।" जब वे यह कह रहे थे कि **हमें घात करने के लिये ... तलवार दे दी है**, तब अधिक उपयुक्तता के साथ वे गुलामों के रुप में गम्भीर दुर्व्यवहार के बारे में सोच रहे थे जिसके लिए उन्हें मारा जाता था अथवा उनसे इतना अधिक काम लिया जाता था कि उनकी मृत्यु भी हो जाती थी। एक व्यक्ति जब स्वयं बदला लेने के लिए ऐसा नहीं कह सकता, **"यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे"** तब वह यही बात कहने के लिए इस प्रकार के वाक्य का प्रयोग करता है, "यहोवा तुम पर दृष्टि करके न्याय करे।"

मूसा की परमेश्वर से शिकायत (5:22, 23)

[22]तब मूसा ने यहोवा के पास लौटकर कहा, "हे प्रभु, तू ने इस प्रजा के साथ ऐसी बुराई क्यों की? और तू ने मुझे यहाँ क्यों भेजा? [23]जब से मैं तेरे नाम से फ़िरौन के पास बातें करने के लिये गया तब से उसने इस प्रजा के साथ बुरा ही व्यवहार किया है, और तू ने अपनी प्रजा का कुछ भी छुटकारा नहीं किया।"

आयतें 22, 23. यह पाठ्य इस प्रकार का रिकॉर्ड प्रदान नहीं करता कि **मूसा** ने इस्राएली सरदारों को किस प्रकार प्रत्युत्तर दिया। फ़िर भी, वह समझ गया होगा और उनकी भावनाओं ने उसे छुआ होगा और स्वयं के प्रति उनके दोषों से मूसा व्याकुल हो गया होगा। उसने उनकी शिकायत को परमेश्वर तक पहुँचाया।

सामान्यता उसने परमेश्वर से मनुष्य के प्रति एक मध्यस्थ के रुप में सेवा की, जो कि लोगों तक परमेश्वर का सन्देश और व्यवस्था पहुँचाता था; इस विषय में (और अन्य विषयों में) उसने मनुष्य से परमेश्वर के प्रति एक मध्यस्थ के रुप में सेवा की, जो कि इस्राएल के चिन्ता के विषयों को परमेश्वर तक पहुँचाता है।

जिस प्रकार, जो कार्य करने के लिए उसने कहा था वह नहीं करने के लिए लोगों ने उस पर दोष लगाया उसी प्रकार जो कार्य करने के लिए परमेश्वर ने वायदे किए थे, उन्हें नहीं करने के लिए मूसा ने परमेश्वर पर दोष लगाया। मूसा ने तुरन्त प्रभाव से कहा, "इन लोगों को छुड़ाने के लिए तूने मुझे बुलाया। मैं आया और वही किया जो तूने मुझसे कहा, परन्तु तूने ऐसा नहीं किया जैसा तूने कहा था; तूने लोगों को छुड़ाया नहीं। वास्तव में, उनकी स्थिति पहले से भी बुरी हो गई! तूने इन लोगों को नुकसान क्यों पहुँचाया?" सम्भावित रुप से परमेश्वर से इस प्रकार ख़ुले रुप से बात करना परमेश्वर के सेवक की धृष्टता को बताता हुआ लगता है परन्तु मूसा ने प्रायः परमेश्वर को इस प्रकार से शब्दों से ही सम्बोधित किया। मूसा की शिकायत के विषय में टेरेन्स ई. फ़्रेदीम ने टिप्पणी की,

> जो बात मूसा नहीं समझ सका वह यह था कि इस विशेष प्रभाव [इस्राएल के लोगों के साथ परमेश्वर के बर्ताव] को उत्पन्न क्यों होना था; इस घटनाक्रम ने लोगों के छुटकारे में और देरी की। परमेश्वर ने मूसा के कठिन प्रश्नों के लिए उसे डाँटा नहीं। परमेश्वर उन्हें इसी प्रकार स्वीकार करता है जैसे वे हैं: जीवन के कठिन क्षणों में शिकायतें करना। मूसा को यह आश्वासन देने के द्वारा कि उसके उद्देश्य सही दिशा की ओर हैं, परमेश्वर ने साधारण रुप से उसे प्रत्युत्तर दिया ...। परमेश्वर के संकल्प स्पष्ट हैं; इस्राएल छुड़ाया जाएगा। वास्तव में, फ़िरौन स्वयं उन्हें भेजेगा, वास्तव में बलवन्त हाथ के साथ उन्हें जाने के लिए कहेगा।[8]

मूसा के द्वारा प्रश्न पूछे गए परन्तु उनका उत्तर नहीं दिए जाने के साथ ही अध्याय 5 समाप्त होता है; यहाँ पर एक दुविधा को रखा गया परन्तु उसका उपाय नहीं किया गया। जब तक अगला अध्याय आरम्भ नहीं हुआ तब तक परमेश्वर के उत्तर प्राप्त नहीं हुए।

अनुप्रयोग

"यहोवा कौन है?" (5:2)

फ़िरौन ने यह प्रश्न किया "यहोवा कौन है?" हमारे दृष्टिकोण से उसका प्रश्न घमण्ड से भरा हुआ लगता है। यह एक ऐसा प्रश्न था जो कि एक ज़िद्दी, कठोर हृय, क्रूर शासक के द्वारा पूछा गया जो कि परमेश्वर अथवा मनुष्य के लिए किसी प्रकार का प्रेम नहीं रखता था। फ़िरौन के दृष्टिकोण से, सम्भावित रुप से यह एक तार्किक प्रश्न था। इस्राएल के लोग एक निम्न स्तर के गुलाम लोग थे, फ़िर भी उनके प्रतिनिधि फ़िरौन की माँग कर रहे थे, जो विश्व में महान राष्ट्र का देवता-राजा था! उसने यह साहस कैसे किया! चूँकि मूसा एक देवता के नाम से कह रहा था जिसे

फ़िरौन पहचानता नहीं था इसलिए उसने पूछा, "यह ईश्वर कौन है जो इस प्रकार की माँग रखने का साहस रखता है?" इसमें आश्चर्य की बात नहीं कि वह गरजा, "यह यहोवा कौन है?" और मूसा की माँगों को पूरा करने के लिए मना करता चला गया।

नि:सन्देह, फ़िरौन ने यहोवा को जान लिया - और वास्तव में इतना अधिक जान लिया कि उसे अपने घुटनों पर आना पड़ा और स्वयं यहोवा की आशिषों की उसने कामना की (12:32)। फ़िर भी फ़िरौन का प्रश्न उचित प्रश्न है। निर्गमन की पुस्तक में स्वयं यहोवा परमेश्वर ने निरन्तर यह घोषणा की कि उसके कामों का उद्देश्य इस्राएल, मिस्री और वास्तव में सब मनुष्यों को यह दिखाना था कि वह प्रभु है (6:7; 7:3-5; 8:10; 8:22)। अतः, हमारे लिए यह एक अच्छा विचार रहेगा कि हम यह देखें कि किस प्रकार निर्गमन की पुस्तक उस प्रश्न का उत्तर देती है। *यहोवा कौन है?* एक ही पाठ में परमेश्वर की सब चारित्रिक विशेषताओं पर बातचीत करना असम्भव है, परन्तु आइए, निर्गमन में सिखाई गई कुछ सच्चाइयों की जाँच करें।

यहोवा, अब्राहम का परमेश्वर, इसहाक का परमेश्वर, और याकूब का परमेश्वर है (3:6, 15; 6:2, 3; 32:13)। उत्पत्ति का आगे का क्रम निर्गमन है; निर्गमन में परमेश्वर ने जो कुछ भी किया वह उसने अब्राहम को किए गए वायदों की पूर्ति के लिए किया। परमेश्वर ने अब्राहम के वंशजों के द्वारा उद्धारकर्ता को संसार में लाने की योजना बनाई। उसने इस्राएल को अपने लोग बनाने के द्वारा इस योजना को पूरा करना आरम्भ किया। निर्गमन में अब्राहम, इसहाक और याकूब का परमेश्वर, एक चुने हुए राष्ट्र का परमेश्वर बन गया और उसने इस्राएली के अपने लोगों के बीच रहना आरम्भ कर दिया (19:5, 6; 29:45, 46)।

यहोवा महान "मैं हूँ," है (3:13, 14)। "मैं हूँ" (הָיָה, *हयाह)* अनुवादित इब्रानी शब्द, "प्रभु" अथवा "यहोवा" (יהוה, *यहवह)* अनुवादित शब्द से निकटता के साथ जुड़ा हुआ है। इसका अर्थ यह है कि प्रभु, सदैव है, सदैव था और सदैव रहेगा - वह अनन्त जन है। परमेश्वर समय में निवास नहीं करता परन्तु वह अनन्तकाल में निवास करता है।

यहोवा परमेश्वर, पवित्र जन है (लैव्य. 11:45; यशा. 6:3)। वह क्योंकि पवित्र है अतः जिस स्थान पर वह मूसा को दिखाई दिया वह स्थान भी पवित्र बन गया (3:5)। जिस स्थान पर उसकी आराधना की गई, वह तम्बू भी पवित्र बन गया (28:29, 35), साथ ही तम्बू से सम्बन्धित सब चीज़ें - यहाँ तक कि महायाजक के वस्त्र - भी पवित्र बन गए (28:2; 29:29; 30:25-29)। उसके लोगों को पवित्र घोषित किया गया (19:6)। आर. एलन कोल ने कहा, "व्यवस्था, परमेश्वर की पवित्रता का प्रकटीकरण थी, तम्बू इसका दिखाई देने वाला एक दृष्टान्त था और इस्राएल राष्ट्र इसलिए रखा गया कि वह इसका एक चलता-फ़िरता विवरण हो।"[9] जैसा कि परमेश्वर के लोगों को उस समय पवित्र बनना आवश्यक था (लैव्य. 11:45), उसके आज के लोगों के लिए भी आवश्यक है कि वे पवित्र बनें (1 पतरस 1:15, 16)।

यहोवा परमेश्वर, सर्वशक्तिमान परमेश्वर है जो उन सबको हरा सकता है जो उसके सम्मुख खड़े होते हैं। निर्गमन, परमेश्वर और मिस्र के ईश्वर के बीच एक संघर्ष और उन ईश्वरों पर परमेश्वर की विजय की कहानी है - एक ऐसी विजय जिसके बारे में निर्गमन 14:30 में बताया गया है और जिसका उत्सव निर्गमन 15 में मनाया गया। मूसा के दिनों में स्वर्ग के नीचे महान राष्ट्र के ईश्वरों से सर्वोच्च ईश्वर परमेश्वर था और वह सौर मंडल में अन्य किसी भी शक्ति की तुलना में सर्वोच्च बना रहता है। कोल ने समझाया, "फ़िरौन, मानव शक्ति की ऊँचाई पर खड़ा होता है, वह परमेश्वर के विरोध की पंक्ति में और उसके लोगों के विरोध की पंक्ति में खड़ा हुआ: अतः उसका पतन, परमेश्वर के विरोध में अथवा उसकी योजनाओं को रोकने के लिए उससे किसी भी समय मुकाबला करने की असम्भावना के लिए, एक सटीक चिन्ह है।"[10] वह वास्तव में, "राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है" (1 तीमु. 6:15)।

यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी परमेश्वर है। उसने स्वयं के लिए यह घोषणा की कि वह "दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय है" (34:6)। निर्गमन की पुस्तक, परमेश्वर के अनुग्रह पर बल देते हुए उसकी दया और कृपा के भरपूर साक्ष्य उपलब्ध करती है।

यहोवा, निस्सहाय लोगों का रक्षक है। जब परमेश्वर ने इस्राएल के लोगों से यह अपेक्षा रखी कि वे कमज़ोर और निस्सहाय लोगों के साथ नरमी से व्यवहार करें तब उसने इसी कारण विशेष रुप से अपने चरित्र और चिन्ताओं के बारे में बताया (22:21-27; देखें लैव्य. 19:9-14)।

यहोवा वह परमेश्वर है जो आज्ञा देता है, आज्ञाकारिता चाहता है और पापी को दण्ड देता है। परमेश्वर जबकि अनुग्रहकारी और दयालु है, वह कठोर भी है (देखें रोमियों 11:22)। वह आज्ञा देता है (अध्याय 20-24), वह आज्ञाकारिता चाहता है (19:5), और अनाज्ञाकारिता के लिए दण्ड देता है (अध्याय 32; देखें गिनती 15:32-36)। यहाँ तक कि वह पद जो बहुत ही स्पष्ट रुप से उसके अनुग्रह और दया के बारे में बताता है वह यह भी कहता है कि "दोषी को वह किसी प्रकार निर्दोष न ठहराएगा" (34:7)।

यहोवा वह परमेश्वर है जो अपना मन बदल लेता है। एक अर्थ में वह बदलता नहीं है (देखें इब्रा. 13:8)। अन्य अर्थ में, फ़िर भी वह अपना मन बदल सकता है (देखें 32:14)। इस्राएल के स्वभाव के अनुसार उनसे व्यवहार करने में उसने अपने तरीके में बदलाव किया। इसी प्रकार, परमेश्वर हमारे प्रति उस समय बदलाव रखता है जब हमारी परिस्थितियों में बदलाव आता है। पापी होने के कारण हम सबके लिए मृत्यु की आज्ञा हो चुकी थी; परन्तु जब मसीह की ओर मुड़ने के द्वारा हमने अपनी परिस्थितियों को बदल लिया और बचा लिए गए तब उसने हमारे प्रति अपने व्यवहार में परिवर्तन कर दिया। हम लोग मृत्यु के दण्ड से छुड़ा लिए गए और परमेश्वर की सन्तान बन गए (रोमियों 3:23, 24; 5:1; 6:17-23)।

इस प्रश्न का उत्तर आप किस प्रकार देंगे "यहोवा कौन है?" परमेश्वर के बारे में हमारी समझ यह निर्धारण करती है कि हम किस प्रकार जीते हैं। परमेश्वर इतना

पवित्र है कि वह लोगों को उनके पापों में भी स्वीकार कर सकता है। वह इतना धर्मी है कि पाप को उसे दण्ड अवश्य देना चाहिए, फ़िर भी वह इतना दयालु है कि वह पापों को क्षमा कर देता है। हमें यह समझना चाहिए: उसकी दया को वे ही लोग प्राप्त कर सकते हैं जो उसके द्वारा रखी गई शर्तों को पूरा करते हैं।

निर्गमन का परमेश्वर (5:2)

निर्गमन पर अपनी टिप्पणी में, आर. एलन कोल ने "निर्गमन की ईश-विद्या" पर एक दक्ष सत्र शामिल किया। उसने कहा कि निर्गमन का परमेश्वर:

1. "वह परमेश्वर है जो इतिहास को नियन्त्रित करता है"
2. "[वह परमेश्वर है जो कहता है,] 'मैं यहोवा हूँ'"
3. "वह परमेश्वर है जो पवित्र है"
4. "वह परमेश्वर है जो स्मरण रखता है"
5. "वह परमेश्वर है जो उद्धार के लिए कार्य करता है"
6. "वह परमेश्वर है जो न्याय में कार्य करता है"
7. "वह परमेश्वर है जिसके क्रोध को टाला जा सकता है"
8. "वह परमेश्वर है जो बोलता है"
9. "वह परमेश्वर है जो सबसे श्रेष्ठ है"
10. "वह परमेश्वर है जो अपने लोगों के बीच रहता है।"[11]

निराश सन्देशवाहक (5:20-23)[12]

अध्याय 5 के अन्त में, मूसा (शेष इस्राएली लोगों के साथ) निराश हो गया। परमेश्वर का वह एकमात्र सन्देशवाहक नहीं था जो निराश हुआ था; एलिय्याह भी (1 राजा 19:1-18) और यिर्मयाह भी (यिर्म. 20:7-9) निराश हुए थे। निराश होना गलत नहीं है। जब परमेश्वर का सन्देशवाहक निराश हो जाए तो उसे क्या करना चाहिए? परमेश्वर के पास जाएँ, जैसा मूसा ने किया। परमेश्वर उन लोगों को सान्त्वना और उत्साह देता है जो कि अपने डर और चिन्ताओं को उसके पास लाते हैं (देखें प्रेरितों 18:9; 1 कुरि. 2:3)।

आरम्भिक असफलता, परन्तु अन्त में सफ़लता (5:20-23)

निर्गमन 5 में मूसा का अनुभव हमें यह स्मरण दिलाता है कि आरम्भ में आने वाली असफलता का आवश्यक रुप से अर्थ यह नहीं है कि उसका निष्कर्ष पराजय ही है। अध्याय के अन्त में, मूसा ऊपरी तौर पर युद्ध हार चुका था; परन्तु कुछ समय बाद परिस्थितियाँ परिवर्तित हो गई, और मूसा जीतने वाले पक्ष की तरफ़ था! अनेक महान लोगों ने अन्ततः सफ़लता से पहले असफलताओं का अनुभव किया। अनेक दल प्रतियोगिताएँ जीतने के लिए पीछे से निकल कर आए। अनेक मसीही प्रयास किसी महत्वहीन आरम्भ के साथ थे और अन्त में सफ़लता पाने से पूर्व उन्हें आरम्भिक असफलताओं पर जय प्राप्त करनी थी। इस कहानी से क्या

शिक्षा मिलती है? प्रयास करते रहना और यह स्मरण रखना कि सफ़ल होने के लिए अन्त में परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है।

समाप्ति नोट्स

[1]REB, NRSV के समान ही है: "तुम्हारे लोग पहले से ही स्थानीय मिस्त्री लोगों से संख्या में आगे बढ़ गए हैं।" [2]जॉन आई. डर्हम, *एक्सोडस*, वर्ड बिब्लिकल कमेन्ट्री, वोल. 3 (वाको, टेक्सस: वर्ड बुक्स, 1987), 64-65. [3]*द पुलपिट कमेन्ट्री* में जॉर्ज रौलिंगसन, "एक्सोडस," वोल. 1, *जेनेसिस एन्ड एक्सोडस*, सम्पादक एच. डी. एम. स्पेन्स एन्ड जोसफ़ एस. एक्सेल (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विम. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1950), 124. [4]एल्फ़्रेड जे. होअर्थ, "ब्रिक" *द इन्टरनेशनल स्टेन्डर्ड बाइबल एनसाइक्लोपीडिया* में, रिवाइज्ड एडिशन, सम्पादक जिओफ़्रे डब्ल्यु. ब्रोमिले (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: विम. बी. अड्र्समेन्स पब्लिशिंग कं., 1979), 1:546. [5]उपरोक्त, 545. [6]हेनरी एच. हैले, *हैलेज़ बाइबल हैंडबुक*, 24 एडिशन, रिवाइज्ड (ग्रान्ड रेपिड्स, मिशिगन: जोनडर्वन, 1965), 120. [7]अंबरटो कस्सुटो, *अ कमेन्ट्री ऑन द बुक ऑफ़ एक्सोडस,* ट्रान्स. इस्राएल एब्राहम्स (जरुसलेम: द मैगनेस प्रेस, 1997), 72. [8]टेरेन्स ई. फ़्रेदीम, *एक्सोडस*, इन्टरप्रिटेशन: अ बाइबल कमेन्ट्री फ़ॉर टीचिंग एन्ड प्रीचिंग (लूज़विले: जॉन नोक्स प्रेस, 1991), 88. [9]आर. एलन कोल, *एक्सोडस: एन इन्ट्रोडक्शन एन्ड कमेन्ट्री,* टिन्डेल ओल्ड टेस्टामेन्ट कमेन्ट्रीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलियोस: इन्टर-वर्सिटी प्रेस, 1973), 23. [10]उपरोक्त, 29.

[11]उपरोक्त, 19-40. [12]वाल्डमर जानज़ेन, *एक्सोडस*, बिलिवर्स चर्च बाइबल कमेन्ट्री (स्कॉटडेल, पेंसिल्वेनिया: हेराल्ड प्रेस, 2000), 92.